साहित्य संहिता

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 0
June 2016

Available at http://sahityasamhita.org/

बाबा की कृपा।

अलका कुमारी

सुबह सवेरे पति उठ के तैयार हुआ
योगा जाने के लिये ।

पत्नि की आखं खुल गई
तो पति ने पुछ लिया :-

पति :- प्रिय, क्या तुम मेरे साथ
योगा के लिए चलना पसंद करोगी ?

पत्नि :- तुम कहना क्या चाहते हो,
मैं क्या मोटी हो गई हूँ.

पति :- कोई बात नही,
इच्छा नही है तो मत चलो.

पत्नि :- मतलब, मैं आलसी हूँ ?

पति :- अरे तुम गुस्सा क्यों कर रही हो ?

पत्नि :- मतलब, मैं हमेशा झगड़ती हूँ.

पति :- अरे, मैंने ऐसा कब बोला ?

पत्नि :- मतलब कि मैं झूठी हूँ.

पति :- अच्छा बाबा,
मैं नही जाता हूँ.

पत्नि :- मैं सब समझती हूँ,
दरअसल तुम जाना ही नही चाहते थे.

पति ने चुप रहने में ही
अपनी भलाई समझी और फिर सो गया .

एक आदमी की शादी को बीस साल हो गये थे। उसने कभी पत्नी के हाथों बने खाने की तारीफ नहीं की। निर्मल बाबा ने उसको सलाह दी पत्नी के खाने की तारीफ करो,कृपा होगी। बाबा की सलाह असर कर गयी।
घर आते ही उसने खाना खा कर पराठों की जम कर तारीफ की। पत्नी ने बेलन उठाया और उसको जी भर कर ठोंका और बोली " बीस साल मे कभी मेरे हाथों बने खाने की तारीफ नहीं की, आज पडोसन ने पराठे भेज दिये तो तुम्हें जिंदगी का मजा आ गया।"

हो गयी बाबा की कृपा।